कल्लोल जी त्रीजो

।। तरंग ४६ मों ।।

श्री श्री गोकुलेशो जयति

अथ छयालीसमो तरंग लिख्यते ।।४६।।

श्लोक -- **श्री गोकुलपति वीरवरो नरपतीः पुनः कदाचिदागत्य हरेविट्ठलाधीश्वरस्थलैः ।।१।।**

याको अर्थ -- फेर हू कबहू सो बीरबल श्री विट्ठलनाथ श्री गोस्वामीजी के सभा घर में आयके तहां विराजमान महाप्रभु श्री गोकुलपति कूं प्रणाम करिके बैठतो भयो है और सो मलेच्छ सार्वभौम अकबर को कृपापात्र हू या गर्व सूं अंध होय रही बुद्धि सूं यह कहनो है, यह नहीं कहनो है और यह योग्य है और यह अयोग्य है और यह धर्म है और यह पाप है या प्रकार के विचार में अत्यन्त मोह कूं प्राप्त होय रह्यो है । तासूं सो मूढ़ वा सभा में विराजमान श्री गिरधरजी कूं आज्ञा करत जैसे होय तैसे कहेत भयो है के यह तीन बातें तुम कबहू नहीं करोगे । जासूं यह मलेच्छ सार्वभौम अकबर कूं हू प्रिय नहीं है और हमकूं हू प्रिय नहीं है । तामें प्रथम तो यह है के श्री गोस्वामीजी कूं बड़े ऐश्वर्य कूं प्रकाशमान करवे वारे गोस्वामी पद सूं अपने कूं कहावनो यह योग्य नहीं है, और दूसरो सगरे स्त्री पुरुषन कों अपनो चरणोदक देनो सोहू युक्त नहीं है और आपके आगे दंडवत प्रणाम करावनो हू युक्त नहीं है । या प्रकार के चाके वचनन कूं सुनकर श्री गिरधरजी वा राजा के भारी अनुकूलता सूं मिले भये ही भलो बुरो कछु हू न कहते भये हैं और महाप्रुजी तो याकूं तृण जैसे होय जानत कहेते भये हैं के हे राजन ! तुमने कहा कह्यो है यह वचन युक्त नहीं है काहा श्री गोस्वामीजी अपने कूं गोस्वामी पद सूं बल सूं लोकन सूं कहिवे कूं कहे हैं किंतु जासूं आपको जो स्वरूप है सो तो अत्यंत दःख सूं ही अत्यन्त अलक्ष है अनिरवचनीय है अद्‌भुत है सो अत्यंत दुर्ल्लभ है ऐसे आपके स्वरूप कूं आपकी कृपा सूं वे साक्षात कर रहे हैं । तासूं वे

तो सर्वथा निवारण किये भये ही स्वतह ही श्री गोस्वामीजी कूं गोस्वामी पद सूं कहे है और जे श्री गोस्वामीजी के सेवक हैं वे तो सगरे ही आपके चरणोदक पान के बिना दस उपवास होय जाये प्राणन कूं हू त्याग कर देवेंगे परन्तु चरणामृत के पान विना भोजन नहीं करेंगे । सो तुम कहो के विनकूं को ना कहि सके अर्थ काहे सूं काम में प्रवर्त भये विनकूं बल सूं श्री गोस्वामीजी के चरणामृत पान के अर्थ प्रेरणा करे हैं किन्तु वे तो स्वतः ही प्रवर्त्त होय रहे हैं और वे तो अपने घर में ही तैसे ही निर्मल चरणामृत कूं निरन्तर पान करें हैं और जे आपके भृत्य हैं के अथवा साधारण लोग हैं वे सगरे ही अपने अपने विविधि कार्यन की सिद्धि के लिये श्री गोस्वामीजी के आगे दंडवत प्रणाम करें हैं । विनकूं को कहे है के तुम श्री गोस्वामीजी के आगे दंडवत प्रणाम करो । यद्यपि वे बल सूं ही दंडवत कराये भये श्री गोस्वामीजी के आगे हू प्रणाम कर रहे हैं तो और बुद्धिमान विनकूं अपने आगे काहे कूं प्रणाम नहीं करावें हैं । तासूं श्री गोस्वामीजी तो ईश्वर हैं मंगलरूप हैं । सगरे पृथ्वी तल कूं पवित्र कर रहे हैं । आपकूं तो दुष्ट हू सर्वथा मान करें हैं । महापुरुष हू मान करें हैं और विन श्री गोस्वामीजी के पुत्र जो हम हैं सो हम हू जब कछू कार्य के उद्देश अथवा विहार के अर्थ स्वतः ही बाहिर पधारे हैं तब विविध लोग हमारे आगे हू प्रणाम करें हैं । विन लोगन सूं मार्ग हू व्याप्त होय जाय है जामें हमहू अपने घोड़ा कूं वेग सूं नहीं चलाय सकें हैं । सो कहा विनकूं जायके हम कहें हैं के हमकूं तुम प्रणाम करो । सो या प्रकार श्री गोकुलेश महाप्रभुजी के वचनन कूं सुनकें सो बीरबल उदासीन होय जातो भयो है और बोलवे में हू समर्थ न होतो भयो है ॥

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधासिन्धो श्री मथुरा गोकुल विहार भये तृतीय कल्लोले षटचत्वारिभस्तरंग समाप्तम् ॥४६॥

श्री श्री श्री श्री श्री

कल्लोल जी त्रीजो

।। तरंग ४७ मों ।।

श्री श्री गोकुलेशो जयति

अथ सेंतालीसमो तरंग लिख्यते ।।४७।।

श्लोक -- **येषां यत्र विलग्नचित सर्वात्मनत तेस्तेषां लीलासिंधो रसोद्राग्नि व मोचयन्नात्म गुणेस्तैस्तैः ।।१।।**

याको अर्थ -- जिन जीवन को जामें चित्त लग्यो है सो सगरे प्रकार सूं विनके चित्त कूं तिन सूं वो लीला सागर श्रीजी अपने विन विन गुणनसूं छुड़ावत ही अपने गुणन में आशक्त करते भये है और श्री गोकुलेश्वर श्रीजी हू जाकूं नहीं छुड़ाय सके ऐसो को है तथापि अपनेसु और आपने गुणनसुतो विन भक्तन के चित्त कूं द्रढ़ ही करे है सो यह श्रीजी तो नहीं छुड़ावे है अपने भक्तन कूं तो आप स्वरूप अथवा गुण जामे आग्रह होय ताकूं यह तो दृढ़ ही करे है सो माघ मास की शुक्ल पक्ष की पंचमी वसंत पंचमी में भगवान गोकुलेश्वर श्रीजी पुष्प तेल सूं अभ्यंग करते भये है तब अत्यंत भाग्यवान जे भक्त है सो सुहाते गरम जल जे केसर रंगवारे है और चंदन अगर कस्तुरी कर्पुरादि सूं सुगंधित हैं विनसूं न्हवावत भये है और अनेक प्रकार के भक्त आनन्द पुर्वक गान स्त्रोत्र वाजादि बजावत भये हैं तब सो श्रीजी अमूल्य परम कोमल स्वेत वस्त्रन कूं धारण कर शोभायमान भये थके कूंम कूंम के सम्बंधसूं पीत होय रहे सुगंधी चंदनसूं उर्धपुंडकूं धारण कर सुंदर भये थके सो श्रीजी कंठ में तुलसी मणी मालाकूं और मुक्तामणी मय मालाकूं धारण करत और हाथन की अंगुलीन में अमूल्यमय सुवर्णमय मणी मुक्ता खचीत मुद्रिकानकूं धारण करि प्रभात समय में श्री गोवरधन श्रीनाथजी के मंदिर में प्रवेश करके व श्रीनाथजी कूं न्हवायके अमूल्य स्वेत वस्त्र पहेराय के और सुवर्ण मय मुक्तामाणिक्य सूं खचित विचित्र भूषणकूं पहेराय के और मनोहर नाना विधि अत्यंत मधुर भोजन करायके और प्रेमसूं बीडी कूं आरोगाय के तब केसर रंग पिचकारी सूं चातुर्यतासूं छिरकत सो प्रेम लीलामें आदर अत्यंत भाववारे रस सागर सो श्रीजी श्रीनाथजी के स्वेत सगरे वस्त्रन में वा केसर रंगकूं सिंचत भये है और हर्ष के समुद्र में निमग्न

होय रहे तासूं प्रेम सूं जडरूप होय रहयो है स्वरूपजाको ऐसे सो श्रीनाथजी पद्म के दल जैसे प्रकाशमांन दोनों नयनसूं पान करि रहे हैं मुख कमल जाकूं ऐसो श्री गोकुलेशजी अबीर गुलालादि कूं वा श्रीनाथजी पै डारत और यथायोग्य अगर चंदन केशर कूं लगावत आनंद के उत्साहसूं मंडीत भये थके और मधुर स्वरसूं व श्रीजी के आगे कीरतनहू करत और भक्तन सूं हू सुंदर गायन करावत भये हैं और करूणा रससूं मिश्रीतसू अपने कटाक्षनसूं भक्त जन स्त्रीजनन कूं आनंदित करत सो श्रीजी विविधी मनोहर विहार कूं करत भये है या प्रकार भीतर सगरे अलक्ष्य सुंदर प्रकार सुं श्रीजी के संग वसंत बिहारकूं करिकें सो श्रीजी बाहिर हू अपने भक्त जे स्त्री पुरुष है विनके संग मथुरा की सगरी गलीन में बिहार करत सो श्रीजी कृपा सागर श्री गोकुलेश्वर श्रीजी मथुरांवासी सगरे जनों में डोल उत्सव पर्यंत अपने दरशन रूप अमूल्य रत्न के समूहन कूं वर्षा करत भये है वामें कितनेक स्वजातिय अभिमान सूं ग्रस्त जिनकी बुद्धि हे ऐसे जे दुष्ट बुद्धि पाखंडी सलमन्सरी कूं टीलाशय देवहत मुर्खहे सो वा सगरे ईशन के हू ईश पूर्ण गुण सागर श्री गोकुलपति की तैसी लीला कूं द्वेष करत और अपने विचारे भये उपायन सूं वा श्रीजी कूं जय करवे कूं चाहना करत अपने सदृश असंक्ष दुष्ट सूं मिले भये प्रतिदिन तहां आयके प्रतिकूंल व्यवहार करत भये है, नर लीला में विशारद परम चतुर सो श्रीजी नरलीला में योग्य जे प्रकार है विनसुहू विहार करत विनकूं जय करत भये है वा श्रीजी ने जय किये हे दौड़ाये भये हू सो निर्लज्ज दुष्ट बुद्धिवारे वे खल फेर हू बारंबार तहां आवते भये हैं ।

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलायां सुधासिंधो श्रीमथुरां गोकुल विहार भये तृतीय कल्लोले सप्त चत्वारीस तरंग समाप्तम् ॥४७॥ श्री श्री श्री श्री श्री

कल्लोल जी त्रीजो

।। तरंग ४८ मों ।।

श्री श्री गोकुलेशो जयति

अथ अड़तालीसमो तरंग लिख्यते ॥४८॥

श्लोक -- **दोलोत्सवात्सन्न दिने कस्मिन्नपि कृपा निधिः श्री नाथ भवने किंचिद्विहरन्के न चिक्वचित ॥१॥**

याको अर्थ -- कबहू दोलोत्सव के निकट दिनन में कृपा नाथ सुंदर श्रीनाथजी के मंदिर में अस्मदादिक जाकु नहीं जाने ऐसे कोई ऐक अनिरवचनीय प्रकारसूं कहू अनिरवचनीय विहार कूं करत विराजमांन होते भये है और प्रभुनको जो भ्राता रघुनाथ लाल है सो प्रभुन सो निवारण कियो भयोहू के तुम ऐकले तहां मती जैयो वे तो दुष्ट है और आज तो अवश्य ही तुमारे जनन में अपकार करेगे ही ईत्यादि प्रकार के श्रीजी के वचनकूं सो रघुनाथलाल जी अनादर करिके जासु जाते भये है तासूं सो पराजयकूं प्राप्त हो तो भयो है और विन दुष्टनने बहुत ही याके उपर हांसीहू करी है और माटी हूं मुखमें लगाई है तब व्याकुल है मुख जाको और मलीन होय रही है शोभा जाकी और बहुत स्वासन कूं देवत ऐसो रघुनाथजी श्रीजी के निकट प्राप्त भयो है तब सगरे विश्वके हू व्रत कूं जानवे वारे सो श्री गोकुलाधीशजी तैसे होय रहे रघुनाथजी कूं देखके गुप्त रीतसूं हसत भये है और गुणन के सागर सो श्रीजी अत्यंत क्षोभकूं प्राप्त होते भये है और वा रघुनाथजी कूं तिन तिन अपने वचनामृतन सूं धैर्य देते भये है । और विन दुष्टनके समूहकूं विजे करिवे मेंहू सो सुंदर श्रीजी प्रतिज्ञा हूं करत भये है, अब और दिन में सो राजाधिराज श्रीजी प्रातः काल में अपने ध्यानादि कृत्य कूं करिके श्रीनाथजी के मंदिर में पधारते भये है, तहाँ कुमकुम के कीच और कपूर की धर और चौबा आदि सूं तैसे सुगंधी सुन्दर वर्णवारे खेलके साजन सूं श्रीगिरधारी जी के संग तैसे तैसे विहार करिके और यह विहार में वा श्री गोवर्द्धन धरजी कूं अत्यंत संतुष्ट करिके तहांसू बाहिर पधार के सो ईश्वर श्रीजी अपने भक्तनके नयन कमलरूप दोनान में स्वरूपामृत समुद्रन कूं अत्यंत परोसते भये है और हजारन करोडन सखा भक्तनसूं मिले है तामे आयके चितकूं जानवे वारे जे सेवक जन है सो वस्तु सूं शुद्ध किये केसर के सघन पंकसूं पुर्ण किये हजारन कलशनकूं और पुष्प तेलसूं भरे भये दिव्य सुवर्णमय कलशनसूं और केसु फुलके कथीत जलसूं भरे भये तैसे चोवासु भरे अमूल्य रत्न मुकता जटीत मनोहर कलशानकूं और अनेक वर्णके गुलाल अबीर बुका आदि सूं भरे भये जे मुकता रत्नसूं जटीत और चतुर स्वर्णकारन ने बनाये ऐसे जे असंख्य पात्र हैं विनकूं और तैसे चतुर स्वर्ण कारनने बनाई जे पिचकारी है विनकूं लेकर और तांबुलके बीडा और घ्रत में बनाये अनेक मनोहर भक्ष्य कें समूह और अनेक प्रकारके मनोहर स्वाद बारे जल इन सगरेन

कूं लेकर के श्री आपके चित्तकूं जानवेवारे सेवकजन तैयार होय रहे है तब भेरी मृदंग ताल पटह आनक और झर्झर तैसे ढक्का दुदुभी और अनंत छोटे दुदुंभी रवाव आयुध विणादिक और झांझ उपंगादिक और वेणुं बंसी गोमुख काम भेरी और झालरी और घुघरी और स्वरनादीनी मुरज प्रणव भुगल अनेक शंख दुम डुमडी डीम डिम और सारंगी, पिनाक और करोडन चंद्र मंडल और स्वर मंडल के समूह हूडक और मडुव मर्दल तैसे और हू जो तिस तिस भेद वारे हजारन वाजे है जे घनके भेद है और नाद के भेद है और सुषिर है और मुरज के जे भेद है और जे अंक्य और आलींग्य और उर्द्धक आदि है और जे डोंडी है वे सगरे ही वजाये और अन बजाये हू बाजते भये है विनके तैसे मंगलमय विश्वके पावन शब्दन के समूहनसूं सो सगरी मथुरां शब्दमय ही होय जाती भई है और तहां प्रसन्न भये हजारन नट और नर्तकीन के चारों ओर नृत्य प्रगट होते भये है और जे मथुरां वासिनी चंद्र मुखी जन है सो प्राणवल्लभ श्रीजी कूं चिरकाल पर्यंत दरशन करेंगे या उत्साहसूं दिव्य वस्त्र भुषणन कूं यथोचित पहिर के सखी द्वारा कूंमकुंम पंक और सुगंधि गुलाल अबीर बुकादि चूर्ण द्रव्य और उत्तम पिचकारीन कूं धारण करिके या श्रीजीकूं मार्ग में याकूं प्रतीक्षा कर रहे है । सो बिन मथुरापुर वासिनी चंद्रमुखीन के अंग रोमांचीत होय रहे है और बांयो नेत्र तैसे बांई भुजाहू फरकती भई है तैसे इनकूं और भाग्यनके अधि राजभावकूं सुचना करत और हू शुभ निमित्त उदय होत भये है सो हाथ कमलसूं आरतीकूं धारण करिकें अपने धरके दरबाजे में स्थित होय रही है और श्री आपके पधारवेकूं हू विचार कर रही है और चिरकाल पर्यंत स्थित होय के या प्रियतम श्रीजी कूं हू ध्यान कर रही है ऐसे विन चंद्रमुखी स्त्रीजनो के घर गली रूप होय जाते भये है और गली तो घररूप होय जाते भये है घरकूं छोड़िके गलीन में ही स्थित होती भई है और जो मथुराजी स्वभावसूं हू बैकुंठसूं अधिक है और फेर श्रीमत कृष्णचंद्र ने हू पवित्र करी है ऐसी वा मथुरा की गलीन कूं इनमें विहार करत प्राणनाथ श्रीजी पधारेगें या प्रकार के हर्षसूं रोमांचित होय रहे भक्तजन स्वर्णमय मार्ज्जन सोहतीनसू शुद्ध करत भये हे । तब प्राणनाथ के ऐक जीवन जिनकूं ऐसी जे चंद्रमुखी स्त्री रही सो सुंदर घिसे भये चंदन अगर कपुर कस्तुरी कुंम कुंमनसू प्रेमसूं लेपन करत भइ है तामें कितनी ऐक तो सुंदर कोमल वस्त्रन के समूहन सूं बीछायत करत भई

है और कितनी विनके ऊपर सुंदर सुगंधित पुष्पन कूं बिछाय रही है और रसिक जे दुग्धा चंद्रमुखी है विनने अपने दृष्टि रूप कमलके समूहनसूं पुजन करी जे अपने द्वारकी भूमी है सो पधार रहे प्रियकूं दर्शन करिवे अर्थ प्रथम कहे प्रकारसुं सोभित होय रही स्त्री जैसे शोभायमान होय रही है और श्रीजी के श्री अंग राग की सुगंधीकूं धारण करत जो गंधमय पवन है सो श्रीजी ने वर्षा किये नाना विधी गंध चूर्णन सूं चित्रित होय के सो श्रीजी की प्रतीक्षा कर रही जे परम सुन्दरी भक्त स्त्री हैं विनके प्रति क्रीड़ा कर रहे श्रीजी के पधारवे के निकट ही निवेदन करत भयी है तामें प्रथम तो बाजेन को शब्द होतो भयो है, फेर भक्तन के मुख सूं उदय भयो जय शब्द को समूह होतो भयो है या पीछे बंदीजनो ने करी भई स्तुति को समूह प्रगट होते भयो है और श्रीजी के सखा गणनने कह्यो हो हो होली ऐसे शब्दन सूं समूह प्रगट होतो भयो है और या श्रीजी के श्रीअंगन के संबंधी जे आभरणन को समूह हू प्रगट होते भयो है तब या श्रीजी को जो महा अनुभाव हतो सोहू प्रगट होतो भयो है और आपके सखागण और आप श्रीजी ने चारो और वर्षा किये जे गंध चूर्ण और हर्षसूं कूंमकुंम के जल सोहूं प्रगट होतो भयो है ॥

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधा सिंधो श्री मथुरां गोकुल विहारमय तृतीय कल्लोले अष्टचत्पारीस तरंग संपुर्णम् ॥४८॥ श्री श्री श्री श्री श्री

कल्लोल जी त्रीजो

।। तरंग ४९ मों ।।

श्री श्री गोकुलेशो जयति

अथ उगणपचासमो तरंग लिख्यते ॥४९॥

श्लोक -- **प्रसाद शिखरारूढ मुखमंडलैः प्रिय सद्भिः प्रियतमताद्र क्रीडासुधार्णबान ॥१॥**

याको अर्थ -- प्रसाद शीखरारूढ और अत्यंत प्रिय श्रीजी के तैसे बिहाररूप अमृत समुद्रन को पान करिवे की इच्छा वारे जे मंदिरन की शिखर के ऊपर चढ़ी भई सुंदरीन के मुख मंडल हैं विनसूं तब उदय होय रहे है अर्बन पूर्ण चंद्र जामे ऐसो होय जातो भयो है तब प्रिय उछल्लित होय रहे अनेक प्रेम

समुद्र जैसे जे विन सुंदरीन के अंगाभरण के प्रकाश हैं विनसूं सो प्रकाश श्रीजी के ऊपर चंदावारो होय जातो भयो है और श्री विट्ठलाधीश श्री गोस्वामीजी हू धन्य हैं जासूं श्री गोस्वामीजी कूं यह हमारे नयनन के तारारूप श्रीमान् श्रीजी श्रेष्ट पुत्रनसूं शोभाबारे जेहैं विनमें मुगटरूप कर रहे है श्री रूक्मिणीजी दैवी हू धन्य है जासूं यह श्रीजी जाके गर्भरूप खान के रत्नभाव कूं धारण करत अपने स्वरूपादि सूं सगरी त्रिलोकी कूं अलंक्रत कर रहे है और यह क्रपासिंधु श्रीजी अपने श्री विग्रह की शोभासू अश्विनी कुमार नल और नकुल हू कूं अत्यंत तुच्छ तृण जैसे हू, न मांनत जा कामदेव के करोडन समूहकूं निरादर सुहू जय करे है सो कामहू धन्य है और पुर्ण चंद्रमाने तैसे शतदल कमलन ने और दर्प्पणन ने हू बडे तप किये है जासूं कितने ऐक सुभक्तजन कछु हू कबहू या श्रीजी के मुख मंडल के ऊपर विनकूं निर्मछन करे है, वार डारे है इत्यादि प्रकार सूं अपने हृदय में चिरकाल पर्यंत वे सुंदरीजन विचार कर रही है तैसे सोना माणीक मुकतान सूं जटीत पिचकारीनसूं केसर रंग कूं लेकर वा प्राणप्रिय श्रीजी कूं पाग कटी वस्त्र और रूचीर कंचुक में सिचन करिवे कूं वेगसु ही दौड़ रही है और कितनी ऐकतो सुगंधी गुलालकूं हाथन में लेकर श्रीजी के दोनो कपोलन में लगायवे कूं छिपके आय रही है और कितनी ऐक तो प्रिय श्रीजी कूं छिरकवे अर्थ और याके वस्त्रन के ऊपरहू छिरकवे अर्थ आय रही है तैसे कितनी ऐक तो चोवाकूं लेकर या श्रीजी के भुज मुलन में लगायवे कूं आय रही है और कितनी ऐक तो या श्रीजी के मुख कमल सबंधी शोभारूप मधु के अपार समुद्रन के नयन कमलन सूं अत्यंत पान करवे अर्थ मिस के सहित आय रही है ऐसी जे पद्-पद् में हू रंभादि के सौन्दर्य के विजय करवे वारी स्त्रीजन है विनसूं चारो और सूं सो श्रीजी वेष्टीत होय रहे और पिचकारी सूं केसर रंगनसूं विनको हृदय आदि अंगन में सिंचन कर और बिनके नयनों में अपने सुंदर रूपामृत के शत अर्बुदन सूं सिंचन करत और विनके कानों में होली के गीतनके मिससूं प्रेम वचन रूप वर्षान सूं सिचन करत ऐसे सो श्रीजी तहां प्रगट होते भये हे तब कितनी एक के तो हारन कूं तोड़ते भये है और कितनी एकके तो हारन कूं खेचि के अपने गले में ही बल सूं ही धारण करत भये हैं और कितनी एक कूं तो अपने हार पहेरावते भये है, और तैसे न कहवे योग्य वचन कूं हू सहित हांसी के कह रहे है और कितनी कूं तो लज्जीत

करे है और कितनीकूं तो हंसाय रहे है प्रसन्न करि रहे है और कितनी कूं तो कुपित कराय रहे है ओरन कूं नम्र कराय रहे है, औरन कूं अपने वांछीत अवाच्य कहेवाय रहे है, औरन सूं स्तुति कराय रहे है, और कितनीकूं स्वयंहू स्तुति करि रहे है और कितनी कूं तो आलिंगन करै है, औरन कूं निमेष रहीत होय के टक टकी लगाय के देखे है, और कीतनी कूं तो समाधान करे है, और कूं हराय रहे हैं और कितनी सूं याचना किये भये वांछीत द्रव्यकूं दे रहे है और कितनी ऐक के संगतो संकेत कूं कर रहे है और कोइकूं चुंबन कर रहे है और कितनी चतुरानन कूं हसत प्रणाम कर रहे है और महा भाग्यवारी कितनीकूं तो कुच कूंभन में अत्यंत स्पर्श कर रहे है, कितनी ऐक सुंदरीन कूं पुलकित कर रहे है और कितनी ऐकन कूं स्वेदवारी और स्तंभवारी कर रहे है और कितनी ऐक चतुरान कूं गद-गद कंठ वारी कर रहे हैं और कितनीन कूं कंपवारी तैसे निरन्तर वरन वारी और कितनीन कूं हर्ष जलन की वर्षा वारी करें हैं और कितनीन कूं नष्ट चित्त और शुभ इच्छित करें हैं और कितनीएक सुन्दरीन कूं निरन्तर वोध वारी करें हैं और कितनी एक मुग्धान के ऊँचे स्तनन में क्षत हू करि रहे हैं और कितनी एक मुग्धान कूं तैसे लाल अधर पल्लवन में दंत क्षत हू करि रहे हैं और कितनी एक विग्धान कूं विन विन मधुर प्रकारन सूं सीत्कार शब्द वारी कर रहे हैं और हंसाय रहे हैं और कितनी एक चतुरानन कूं जोर सुं अंगराग लेपन कर रहे है और कितनी ऐक चतुरानन के कपोलन कूं कर्पुर की धूरसूं मंडित करे है और कितनी ऐक मुग्धान के वस्त्रादि खेंच लेवे है और कितनी विदग्धान की कंचुकी फारे है औरन के कुचन में पत्रावली लीखे है और कितनी एक मुग्धा मध्यानकूं वश करि रहे है । औरन कूं गायन काराय रहे है और कितनी ऐक मध्या सुंदरीन कूं रस सागर में मग्न करि रहे है और कितनी ऐक विदग्धान कूं तापसूं तप्त कराय रहे है और कितनी ऐकतो श्रीजी कूं पकड़ रही है और कोइ तो देख रही है और आपकूं प्रसन्न कर रही है और कोइ तो आपकूं सिचिंत कर रही है और तो पट वस्त्रन के समूहन सूं तैसे चंदन के चूर्ण मुष्टीन सूं और कस्तुरी लेपन सूं सेवा कर रही है और कितनी ऐकतो आपकूं खेंच रही है और तो मंद हास्यरूप अमृतनसूं आपकूं न्हवाये रही है और याचना कर रही है तैसे और कितनी तो हास्य नर्म वचनो के सहित बुलाय रही है और कोई तो स्पर्श करे है और चतुरा

करे है और कितनीकूं तो हंसाय रहे है प्रसन्न करि रहे है और कितनी कूं तो कुपित कराय रहे है ओरन कूं नम्र कराय रहे है, औरन कूं अपने वांछीत अवाच्य कहेवाय रहे है, औरन सूं स्तुति कराय रहे है, और कितनीकूं स्वयंहू स्तुति करि रहे है और कितनी कूं तो आलिंगन करै है, औरन कूं निमेष रहीत होय के टक टकी लगाय के देखे है, और कीतनी कूं तो समाधान करे है, और कूं हराय रहे हैं और कितनी सूं याचना किये भये वांछीत द्रव्यकूं दे रहे है और कितनी ऐक के संगतो संकेत कूं कर रहे है और कोइकूं चुंबन कर रहे है और कितनी चतुरानन कूं हसत प्रणाम कर रहे है और महा भाग्यवारी कितनीकूं तो कुच कूंभन में अत्यंत स्पर्श कर रहे है, कितनी ऐक सुंदरीन कूं पुलकित कर रहे है और कितनी ऐकन कूं स्वेदवारी और स्तंभवारी कर रहै है और कितनी ऐक चतुरान कूं गद-गद कंठ वारी कर रहे हैं और कितनीन कूं कंपवारी तैसे निरन्तर वरन वारी और कितनीन कूं हर्ष जलन की वर्षा वारी करें हैं और कितनीन कूं नष्ट चित्त और शुभ इच्छित करें हैं और कितनीएक सुन्दरीन कूं निरन्तर वोध वारी करें हैं और कितनी एक मुग्धान के ऊँचे स्तनन में क्षत हू करि रहे हैं और कितनी एक मुग्धान कूं तैसे लाल अधर पल्लवन में दंत क्षत हू करि रहे हैं और कितनी एक विग्धान कूं विन विन मधुर प्रकारन सूं सीत्कार शब्द वारी कर रहे हैं और हंसाय रहे हैं और कितनी एक चतुरानन कूं जोर सुं अंगराग लेपन कर रहे है और कितनी ऐक चतुरानन के कपोलन कूं कर्पुर की धूरसूं मंडित करे है और कितनी ऐक मुग्धान के वस्त्रादि खेंच लेवे है और कितनी विदग्धान की कंचुकी फारे है औरन के कुचन में पत्रावली लीखे है और कितनी एक मुग्धा मध्यानकूं वश करि रहे है । औरन कूं गायन काराय रहे है और कितनी ऐक मध्या सुंदरीन कूं रस सागर में मग्न करि रहे है और कितनी ऐक विदग्धान कूं तापसूं तप्त कराय रहे है और कितनी ऐकतो श्रीजी कूं पकड़ रही है और कोइ तो देख रही है और आपकूं प्रसन्न कर रही है और कोइ तो आपकूं सिचिंत कर रही है और तो पट वस्त्रन के समूहन सूं तैसे चंदन के चूर्ण मुष्टीन सूं और कस्तुरी लेपन सूं सेवा कर रही है और कितनी ऐकतो आपकूं खेंच रही है और तो मंद हास्यरूप अमृतनसूं आपकूं न्हवाये रही है और याचना कर रही है तैसे और कितनी तो हास्य नर्म वचनो के सहित बुलाय रही है और कोई तो स्पर्श करे है और चतुरा

तों आपकूं अंगीकार कर रही है तैसे विदग्धा तो बारंबार प्रणाम कर रही है और सुंदरीतो श्री आपके कमर वस्त्रके अंचलकूं पकड़के बारंबार अपने मनोरथन कूं प्रार्थना कर रही है और कोइ तो श्रीजी कूं श्रृंगार धराय रही है और कोइ तो आपकूं विहार कराय रही है और कोइ तो महाभाग्यवती परम सुंदरी कूं तो स्वयं हू प्रभु श्रीजी कूं बिहार कराय रही है ॥

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधासिंधो श्री मथुरां गोकुल विहारमय तृतीय कल्लोले उगाणपचास तरंग समाप्तम् ॥४९॥

श्री श्री श्री श्री श्री

कल्लोल जी त्रीजो

।। तरंग ५० मों ।।

श्री श्री गोकुलेशो जयति

अथ पचासमो तरंग लिख्यते ॥५०॥

श्लोक -- **तस्मिनि क्रीडा ते रस मुर्तौ तथा तथा मथुरा यां पुरः सर्व दास्य चक मिरे परं ॥१॥**

याको अर्थ -- जैसे जैसे रसात्मक सो श्रीजी अत्यंत विहार करे है तैसे तैसे वा मथुरापुरी के और सगरी पुरी ही केवल दास्य कूं हू इच्छा करत भई है और उछल्लित होय रहयो है दीनता को सागर जामें ऐसो सो बैकुंठन को समूह हू अपनी अयोग्यता के विचार सूं अत्यंत दूर स्थिति होय के या श्री मथुरांजी कूं मन शरीर और वाणी सूं प्रणाम कूं करत भयो है वा रसमय क्षण में कितनी ऐक सुंदरीन के हृदय कूं आच्छादन करिवे वारो वस्त्र हू अत्यंत गिरि जातो भयो है तैसे पहरवे योग्य वस्त्रहू गिरि जातो भयो है यद्यपि यह पुर्ण चंद्रमुखी मृगनयनी सूंर्य कूं हू नहीं देखवे वारी है तथापि तहाँ ठहेरे जे जन हते तासूं या श्रीजी के श्री अंगकी माधुर्य में इनकी दृष्टि और रसना आसक्त है तासूं बिन स्त्रीगणन के गिरे भये वस्त्रन कूं नहीं पहेचानते भये है और श्रीजी हू जासूं अन्य लोक जैसे ही लंपट होय जाते भये है तासूं अपने स्वरूपामृत के सागरन के अनुभव करवे में ही इन स्त्री रत्नों के दर्शनानंद को रूप अर्बन सागरन में निमग्न ही होतो भयो है जैसे निधि लक्षन की प्राप्ति के जे दिन

है और अमृत की प्राप्ति के जे दिन है और कामधेनु समंधी दुग्धपान के जे दिन है और कल्पवृक्षन की छायां में विश्राम के जे दिन है और चिंतामणी के गुणन सूं व्यवहार के जे क्षण है और वेकूंठ प्राप्ति के जे दिन है वे सगरे हाथन कूं बांध के अपनी अयोग्यता के विचार सूं अत्यंत दूर ही ठाडे होय के जा दिन कूं प्रणाम करत भये है सो सगरे कालनकूं सार्वभौम सुंदर जो प्रभुन को होली लीला संबंधी दिन है वाके उपर सगरे भाग्यवारेन सूं हू बंदित जे रास संबंधी रात्री गण है सोहू स्वयं अपने कूं न्योछावर करत भई है अब सो श्रीजी श्री रघुनाथजी कूं देखि के और वाकूं पूछके वाने कह्यो है जो गुजरे दिन को वृत्तांत हतो सो सुनि के सुजाति के जो अभिमान वारे हते जे खल मूर्ख हते विनकूं विहार सूं ही जय की इछावारे सो परम सुंदर संपूर्ण पुरुषोत्तम श्रीजी सेवकन कूं आज्ञा करत भये है बहुत गंध चूर्ण और पट वस्त्र और कुम कुम पंक और कर्पूर कस्तूरी को द्रव और चोवा को संग्रह कर्यो चहिये इतनो सुनत ही मथुरावासी बुद्धिमान और प्रभुन को भक्त जो उपेंद्र हतो सो ईश्वरेस्वर गुण सागर श्रीजी कूं हंसिके कहिवे लग्यो के हे प्रभो दुष्टन के लिये गंध चूर्णादिक संग्रह करि के कहा करेगे सो तो रहित देवो याके योग्य वे नहीं है विनके लिये तो भुजे मूंगन को चूर्ण और गोमय की भस्म और दुष्ट गली की रज और पुरातन फटे वस्त्र और कीच भर्यो मुषक और मरी बिलाडी और कंटकारी की माला और खाट की रस्सी और घुणन सूं खाये भये काष्ट को चूर्ण बहुत और हू फटी टूटी उपानह हू यह सगरे विन दुष्टन के योग्य है सो या प्रकार की उपेंद्र की विज्ञापना कूं सो श्रीजी मंद हास्य सूं अनुमोदन करिकें नृत्यवादीन के शष्ट और गान हास स्तुति आदिन सूं और जय शब्द और कल कल शब्दन सूं अनंत स्त्री पुरुष अपने भक्तन सूं सेवित होय रहे सो रस सागर श्रीजी हंसत हंसत ही प्रस्थान करत भये है, निकट ठहरे भये विन दुषनकूं विजय करवे अर्थ श्रीजी पधार रहे है इतने में ऐक विकृत आकार वारो गंदर्भ घुडवाल जी वैद्य ने देख्यो है तब सो जी वैद्य वा गर्धव कूं संग लेकर चलि रहे जी वैद्य कूं देख कर हंसत श्री मुखवारे श्रीजी प्रसन्न होत वा अपने घुडवाल, जी वैद्य कूं कहत भये है अरे या गंदर्भ सूं कहा करोगे रे सोतो प्रभुनकूं विज्ञापना करत भयो है के हे महाराज आप मोन गही रहीये कछु हू प्रगट न करिये जासूं सुजाती अभिमान वारे दुष्टन के चर कहा के छिपके दूत विचारे है सो यह

गंदर्भ जा काम में आवेगो सो नर्म क्रीडा में चतुर वर, आप आगे जान जावोगे ही सो या प्रकार नर्म क्रीडा में परम चतुर सो जगदीश्वर श्रीजी अपने भक्त स्त्री पुरुषन के संग विहार कूं करत करत ही सजातीय अभीमान सूं ग्रसित है बुद्धि जाकी और दुष्टन को जो राजा है ऐसे वा नारायण भटके असुया रूप कर्दमसूं भरे भये पाप मति मत्सरी दुष्टन सूं मिले भये वा घरकूं प्राप्त होते भये है, जा घर में सगरे दुष्ट नारायण भट के पीछे चलिवे वारे भुंजी भांग के चूर्ण की पोटलीन कूं प्रभुन के ऊपर अणु के भक्त सेवकन के ऊपर डारवे कूं हाथन में लेकर संकुचित होयवे सूं प्रवेश जामें दुःखसुं होय सके ऐसे द्वार में पाप चितवारे ठाड़े होय रहे है, सो यह निश्चय करि रहे है के यहि दरवाजो तो बहुत सुक्ष्म है बहुत पुरुष तो प्रवेश कर हू नहीं सके है जो प्रथम ही यामें प्रवेश करेगो बाकु बलसू पकड़ाय के निर्लज्ज तुच्छ दासी द्वारा नग्न हू करावेंगे या अभिप्राय सूं ही इहां बहुत ही दासी ठहिराय राखी है सो वे हू योवन के भारसूं और मादक द्रव्य जे भांग पोस्त अफीम आदि हैं बाके लक्षण सूं अत्यंत ही, मत्त होय रही है विनसूं वाके मुख के ऊपर मूत्रण हू करायेगे और अत्रे अपवित्र द्रव्यकूं लेपन और वारंवार नर्म हांसी हू करेगे और हू विन विन उपाय सूं वाकूं दुखी करेगे, काजल लगावेंगे और उपरणा सूं हू ताणना करेंगे और जे प्रभु न के लोक वाकी रक्षा के अर्थ प्रवेश करेंगे विनकु हू सगरे हम मिलके तब तक रोकेगे जब तक वे दासी बाकूं रस्सी सूं हाथन में पावन में और गले में बांध के स्थापन करेगी जब और हू प्रवेश करेगो वाकूं हू तैसे ही करेगे तैसे और और कूंहू करेंगे या प्रकार सगरे भक्तन के सहित न जय करिवे योग्यकूं हू हम विना यत्न के ही होली के विहार स्थल सूं जय करलेगे चंडालन सूं हू निंदित वे महामूर्ख या प्रकार के निंदित व्यर्थ मनोरथ न के शतन सूं वंचित ही होय के तहां स्थित होते भये है ॥

इति श्रीमद गोकुलेश लीलाया सुधा-सिंधो श्री मथुरा गोकुल विहारमय तृतीय कल्लोले पचासमुं तरंग संपूर्णम् ॥५०॥

श्री श्री श्री श्री श्री

कल्लोल जी त्रीजो

।। तरंग ५१ मों ।।

श्री श्री गोकुलेशो जयति

अथ इकयावनमो तरंग लिख्यते ।।५१।।

श्लोक -- **तदा प्रभो श्री वद्रोख्यो संतुरंग मरक्षकः ।। सुबुद्धी र्भाग्य बाश्वाले सर्वेषांपुरतो भवेत ।।१।।**

याको अर्थ -- तब अत्यंत बुध्दीमान और भाग्यवान और जो प्रभुन को घुडवाल जीवेद हतो सो सगरेन के आगे ही चलतो भयो है तब सुक्ष्म हूं दरवाजे में सो जीवेद बडे यत्न वारो वा गंदर्भ कूं हाथन सूं वारंवार प्रणाम करत प्रथम ही प्रवेश करावतो भयो है सो विन दुष्टन के दुष्ट अभिप्राय कूं जानवे वारे वा जीवेद सूं प्रेरणा किये भये और भीतर प्रविष्ट भये व गंदर्भ के वेगसूं कानो के स्पर्शकूं प्राप्त होयके वे दुष्ट वेग ही कछु दूर होते भये है तब ही प्रभुन के जे बहुत लोक हते सो भक्त और भ्रात और ही लोग रोकवे बारे के न होयवे सूं माथुर उपेन्द्र जैसे और हू मथुरावासी लोक प्रभुन की तैसी वा नर्म लीला कूं देखवे लिये प्रवेश कर जाते भये है तब होली को खेल ऐसो होय है ऐसे याके प्रकार कूं जानवे वारो सो घुडवाल जीवेद तैसे मिले भये और हूं बहुत धूर्त लोग और प्रभुन में भक्तीवारो सो उपेन्द्र सगरे ही नारायण भट के कहिवे सूं जे भीतर दुष्ट अंतकरण वारी दासी हती विनकूं वे सगरे मर्म हांसी सूं दुखी कस्त भये है और हरीहर भट्टादितो निमर्याद अत्यंत नर्म के वेश में होय के विनके संग मैथुन हू करते भये है और अपने चरणन में गिराय के हाहाकार हू करावते भये है तब वेहू कहिवे लागी के हमकूं तो छोडो जी हमतो सदा दासी है अब तो आपकी ही दासी है सो हमकूं इन दुष्ट पापीन ने बलसूं ही या कार्य में लगायो है इत्यादि वचनन कूं बारंबार वे कहे रही है सो प्रभुन के अभिप्राय कूं विचार के बड़े यत्नसू ही वे लोग विनकूं छोड़ते भये हैं । सो या प्रकार सूं जब अत्यंत कोलहल होय रहयो है और प्रभु श्रीजी तो या लीलासूं अत्यंत प्रसन्न होय रहे है इतने में सो दुष्टन को मुख्य नारायण भट्ट अपने घर सूं बाहिर निकसतो भयो है । जब प्रभुन के जे भक्त हूते सो यह कहा

है, कहा है, काहे सूं ऐसो करो हो कैसे यह करो हो, ऐसे वारंबार कहे रहे वा नारयण भट्ट को बलसूं ही पकड़ के गंदर्भ के उपर पूंछ की और मुख करिकें चढाय देते भये है तब हसत हसत श्रीजी रघुनाथ लाल के मुख ऊपर नयन कमल के कोर कूं चलाय के कहेत भये है के यह सोई ही है कहां के तुमने जो रघुनाथ लाल कूं दुष्टता करी हती वाको फल यह है ऐसे सुचना सूं कहत भये है तब या अंतर में तब प्रभुन के दास और मथुरावासी धूर्त और ब्राह्मण और वा नारायण भट्ट के पक्ष में स्थित जे दासी हती जे प्रभुन के सेवकन ने जय करी है वे सगरी और जे वाके अनुयायि दुष्ट हते वेहू सगरे मिल के कीचन सूं वा नारायण भट कूं बलसूं ही अत्यंत लेपन करत भये है और मुंगन के चूर्णन सूं तैसे दुष्ट गली की रज और भस्म और घुनन सूं भक्षण किये काष्ट के तैसे चूर्णन सूं और विनके हाथन सूं जोर सूं खेचि के लिये काजर और भुनी भयी भांगके चूर्णन सूं विन के मुखन में और मस्तकन में और नयनों में कानों में मुखके भीतर हू बारंबार लगावते भये है और मर्यो मूषक और बिलाड़ी और कंटकारी की माला बल सूं ही विनके गले में धारण करावत भये हैं और हाथ पांव और कंठ में खाटकी पुरानी रस्सीनसूं बांधते भये है और टूटी भई उपानन हू सूं तहाँ तहाँ ताडंन करत भये है और मुत्रण तैसे अधोवायु के मोक्षण और अपवित्र दुर्गंधी के लेपन सूं अत्यंत ही विनकूं व्याकुल ही करत भये है, हर्ष सहित जाकुं देख रहे भक्त और स्त्री पुरुषन के जे करतालन सूं भये महा अट्टहासन के शब्द है और कोलाहल रूप जय गोकुलेश ऐसे जे नयन समूह है और जे बाजेन के शब्द है और हो हो होली ऐसे जे शब्द है और विलक्ष करिवे वारी जे गारी हैं और नारीन के मंगलमय गांन है और उनके आभरणन के जे झंकार है और साधु साधु जे महाशब्द है और नृत्य कर रहे जे स्त्री पुरुष है विनके जे चरणन के शब्द है और महा वैकुंठ कूं हू दुर्ल्लभ जिनकी चरण रज है ऐसे विन सगरे शब्द सूं सो अत्यंत भाग्यवारी मथुरापुरी सगरी ही पूर्ण होय जाती भइ है और पूर्ण परमेश्वर श्रीजी को जो आवरण रहित और दूर करो है सगरी लोक वेद मर्यादा को समूह जाने और अद्‌भुत और हास्य श्रृंगार करुणा हर्ष कौतिक सूं जो कर्बुर है मिश्रित होय रहयो है और हठ चपलतासूं जो लालित है मनोहर है और रसात्मक जे भक्त है सोवे जाकूं पलक रहित नयन कमल रूप अंजुलिन सूं जाको पान

कर रहे है ऐसो जो श्रीजी को स्वरूप है सो अलौकिक माणिक्यन के सार्वभौम वर अपने सूं हू जा मथुराजी कूं शोभायमान करत भये है वा मथुराजी की जे चरण कमल संबंधी पराग के अणु के कण मात्र ऊपर हू का मूरख बैकुंठ के समूह कूं सहसा परिवारण करे के न्योछावर करे सो या मथुरा के चरण कमल सबंधी पराग के अणु के कणिका की हू महिमा अपार है ये भाव है तब हे प्रभो मोकूं छुड़ाये इत्यादि अनेक प्रकारसूं गलीन में ऊंचे स्वरन सूं पुकार रहे या नारायण भट कूं प्रभुन के जे भृत्य हते सो याकूं सहित आश्चर्य के वा गंदर्भ के ऊपर वाके पूंछ के सनमुख चढ़ाय के विलक्ष है, व्याकुल है मुख जाको ऐसे वा नारायण भट्ट कूं बलसूं ही सगरी गलीन में भ्रमण करावते भये है श्री गोकुलाधीश्वर श्रीजी तो निवारण हू कर रहे है तथापि आपके लोक वा नारायण भट कूं अत्यंत भ्रमाय के अत्यंत व्याकुल भये थके वाकूं छोड़ देते भये है तैसो सो दुर्वृत नारायण भट लज्जासूं व्याकुल होय के घरमें न जायवे कूं समर्थ भयो थको तहां तहां नाना प्रकार सूं सुंदर खेल रहै जे प्रभुनके सेवक है सायंकाल पर्यंत तो विनके पीछे ही घर जायवे कूं पूछत ही फिरत भयो है तब विनसूं या आज्ञा कूं पाय के अपने घरकूं जातो भयो है और भक्तजन तो आपकी स्तुति हू कर रहे हैं और विनके रोम रोम प्रति ही अमृत के समुद्रन कूं वर्षा करत ही सो करोडन कांम सूं विजय करिवे वारो है श्री विग्रह जाकूं ऐसे करुणासागर श्रीजी रघुनाथ लाल के संग हसत ही या प्रकार विहार करत सो श्री महाप्रभु अनेक जीवन को उद्धार करिकें अद्‌भुत अपने धाम कूं प्राप्त करत भये है, अब कोई दिनांतर में चतुरंग गली भट्ट श्री आपकूं मिलिके सहित नम्रता के प्रणामकूं करिकें श्रीमद्‌गोकुल मंडन प्रभुन कूं विज्ञापना करत भयो है के हे महाराज कृपासिंधो हे गोकुल प्राणनायक नारायण भट तो दुष्टन को शिरोमणी हतो वाकूं जो आपके सेवकनने गंधर्भ के ऊपर चढ़ायो है और तैसे तैसे बहुत ही जो हांसी करी है सो बहुत आछो ही भयो है यासूं सगरे लोकन कूं सुख भयो है और मेरे मेहू अनंत हर्ष के समुद्रन कूं वर्षा कर रह्यो है या प्रकार ही अपनी लीला के द्रोही शठ पापी क्रतघ्नी दुर्बुद्धी मूर्ख पाखंडी मानि सगरे दुष्ट जनन कूं अपने भक्तन द्वारा गंदर्भ पर चढ़ाय के विनको कारो मुख कराय के सदैव ही स्वयं जय कूं प्राप्त होवो और हे महाराज अपने भक्तन कूं हू तैसे तैसे पालन करो या प्रकार के वचन कूं सुनी के मंद मुसक्यान सूं

मिले श्री गोकुल के प्राणनाथजी सूं अत्यंत अभिनंदन कियो थको सो गंगल भट जेसो आयो हतो तैसे ही जातो भयो है सो गोकुल के प्राणनाथ पूर्ण परमेश्वर श्रीजी के या होली उच्छव की क्रीडा कूं जो नर सुने है सो वाके घर में सदैव ही उत्सव होय है और वाकूं दुष्ट संग निवृत होय जाय है और वा श्री गोकुलपती में नित्य भक्ती प्रेम निरंतर बढ़े है और सगरे सुखकूं देवेवारो आपके भक्तन में अनुराग बढ़े है ।

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधासिंधो श्रीमथुरा गोकुल विहारमये तृतीय कल्लोले एकपंचासमो तरंग समाप्तम् ॥५१॥

श्री श्री श्री श्री श्री

कल्लोल जी त्रीजो

।। तरंग ५२ मों ।।

श्री श्री गोकुलेशो जयति

अथ बावनमो तरंग लिख्यते ॥५१॥

श्लोक -- **इत्यं वत्स रषट्क स मथुरायां विहृत्यवै आरुहय तरणी रम्यां परिवार समाचित ॥**

याको अर्थ -- या प्रकार श्रीजी छै वर्ष पर्यंत मथुरांजी में विहारकूं करिकें सुंदर नौका पर चढ़िके परिवार के सहित ही मथुरापुरी सूं सो करुणा सागर श्रीजी १६२८ वर्ष में फाल्गुण मास कृष्णपक्ष सप्तमी तिथि में अपने स्वरूप सूं अपने निज स्थान कूं शोभायमान करत्र भये हैं । श्री गोकुल में जो श्री गोकुलेशजी ने चरित्र किये है सो वे तो अपार ही है सो श्री गोकुलाष्टक की तैसी श्रृंगार स्वरूप व्यार जासूं कछुक सूंचना किये है और हू कछुक सूंचना करे है वाकूं श्रीजी में आशक्ति बुद्धि वारे तुम सुनो कबहू अपनी श्री गोकुलसूं अपने जनक श्री मद् गोस्वामीजी के संग प्रभु श्री गोकुलेश्वर श्रीजी वन यात्रा के मिस सूं वनके जीवन कूं उद्धार करिवे के लिये मथुरां के द्वादस वनन में पधारते भये है सो पनही और पादुका कूं हू त्याग के नहीं पहेरके जब मथुरा सूं पधारे है तब राधाकुंड उलंघन करिकें श्री मद् गोवर्द्धन में शोभायमान जो देव श्रीनाथजी को मंदिर है तहाँ प्राप्त होते भये है तब वा दिन में अत्यंत धूप हती तासूं